हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला

जन संपर्क कार्यालय

राज्य सरकार की नीतियों क□जनसंपर्क के माध्यम से ल□गों तक पहुंचाना आवश्यक - प्र□ ए.डी.एन. वाजपेयी

राज्य के ल□क कल्याण के कार्य व य□जनाओं क□जन साधारण तक पहुंचाने में जनसंपर्क प्रमुखों की महत्वपूर्ण भूमिका ह□ती है यह बात राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के आय□जन अवसर पर श्कौशल विकास में पारंपरिक एवं आधुनिक ज्ञान की भूमिकाश् विषय पर आय□जित कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य ए.डी.एन. वाजपेयी ने आज यहां कही। यह कार्यक्रम पबलिक रिलेशन स□साईटी आफ इंडिया, शिमला चैपटर व विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आय□जित किया गया था।

कुलपति ने कहा कि व्यक्तिगत स्वार्थ से उपर उठकर ल□क हित व जन कल्याण हेतू कार्य करना ही हमारे जीवन का उद्देश्य ह□ना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्थान का सुचारू रूप से संचालन उसके जनसंपर्क व व्यक्तिगत संपर्क पर अत्यधिक निर्भर रहता है।

कौशल विकास पर कुलपति ने कहा कि प्राचीन समय से ही हमारे देश के ल□गों में कौशल व निपुणता की कमी नहीं रही है और बदलते परिवेश में सूचना तकनीक के आने के कारण पारंपरिक शिक्षा के साथ आधुनिक तकनीक से कौशल की कायापलट ह□रही है। उन्होंने कहा कि प्रभावी जनसंपर्क के सहय□ग से आज वांछित परिणाम सामने आ रहे हैं तथा आधुनिक शिक्षा ने इसमें अहम भूमिका निभाई है।

प्र□ वाजपेयी ने सभी का आह्वान किया कि उपलब्ध स्वदेशी कौशल क□परम्परागत ज्ञान से ज□ड़कर आधुनिक ज्ञान व साधनों का उपय□ग करते हुए हमें विकास की ओर आगे बढ़ना ह□गा। उन्होंने कहा कि आज परम्परागत शिक्षा क□हम भूलते जा रहे हैं जिसे नए सिरे से आधुनिकता के साथ तादातम करते हुए विकास के रथ क□आगे ले जाना ह□गा।

कुलपति ने युवाओं विशेषकर पत्रकारिता के छात्र-छात्राओं क□बेहतरीन जनसंपर्क के टिप्स दिए तथा कहा कि किसी भी ब□□या विज्ञापन का जब तक पूर्ण रूप से सही जनसंपर्क नहीं ह□ता तब तक उसकी विपणन नीति कामयाब नहीं ह□सकती। इस समय आवश्यकता कुशल प्रबंधन व प्रभावी जनसंपर्क क□अपनाने की है जिससे सीमित संसाधनों में भी ब□□या परिणाम सामने आ सकते हैं।

उन्होंने कहा कि बेशक विज्ञापन उद्य□ग ने वाहवाही बट□री है लेकिन आज भी विज्ञापनों में सर्वाधिक दुरूपय□ग युवा माडलों का ही ह□ता है, जबकि विज्ञापनों क□परम्परागत व नैतिक मूल्यों पर आधारित रखकर बनाया जाना चाहिए।

कुलपति ने बताया कि कौशल विकास के क्षेत्र में केवल इंजिनियरिंग व तकनीकी क्षेत्र क□ ही प्रमुखता दी जा रही है जबकि हमारे स्थानीय कौशल क□हम उससे अलग रखते रहे हैं। उन्होंने चम्बा के रूमाल, पहाड़ी पेंटिग, किन्नौर की शौल और ट□पी का उदाहरण देते हुए कहा कि इस तरह के हस्तशिल्पों क□भी कौशल विकास से ज□ड़ा जाना चाहिए। जिससे यह कला भी जीवित रहे और स्थानीय युवाओं क□घर द्वार पर र□ज़गार के अवसर प्राप्त ह□ सके।

इस अवसर पर प्रति कुलपति प्र□ राजिन्द्र सिंह चैहान, पी. आर. एस. आई. शिमला चैपटर के अध्यक्ष श्री अश□क शर्मा के अतिरिक्त कई सदस्य, अधिष्ठाता अध्ययन, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, मुख्य छात्रपाल, अधिष्ठाता महाविद्यालय विकास परिषद्, कई अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष पत्रकारिता एवं प्रबंधन विभाग के छात्र छात्राएं भी उपस्थित थे।

जनसंपर्क अधिकारी